सिंचाई तथा खरपतवार नियंत्रण :- खरपतवार के नियंत्रण के लिए प्रारम्भिक अवस्था में दो या तीन बार गुड़ाई निराई करनी चाहिए। निरन्तर नमी बनायें रखने के लिए सिंचाई आवश्यक है।

रोग नियंत्रण :- कभी-कभी कन्दों की मक्खी, मकड़ी तथा पत्तियाँ काटने वाले कीड़ों का प्रकोप होता है। कुछ क्षेत्रों में कन्द से सड़ने की समस्या रहती है। ऐसी दशा मे निम्नानुसार उपचार करना चाहिए-

1. फफूँदी नाशक (कारमार) तथा जैविक खाद से कन्दों का उपचार कर इनकी बुवाई करनी चाहिए।
2. भूमि में कार्बनिक तत्वों की मात्रा बनाये रखें।
3. प्लान्ट हारमोन्स फफूँदी-नाशक तथा जैविक कीट नाशकों का प्रयोग करें।

कन्दों की खुदाई :- जैसा कि उपर्युक्त प्रजातियों के फसल के पकने की अवधि बताई गयी है, उसी के अनुसार (नवम्बर-दिसम्बर) हल्दी की खुदाई कर, कन्द निकाल लिये जाते हैं।

उत्पादन :- उन्नत प्रजातियों की खेती अच्छी विधि से की जाने से प्रति हेक्टेयर 20-25 टन हल्दी का उत्पादन किया जाता है।

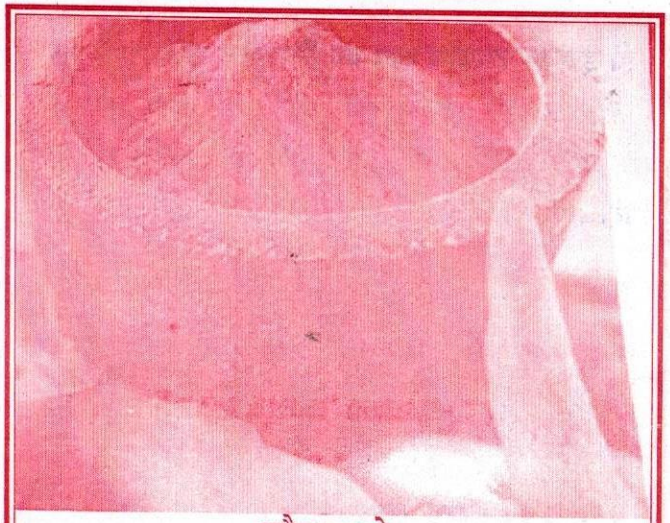

सौजन्य से-

शोहरतगढ़ एन्वायरन्मेंटल सोसाइटी

-: प्रधान कार्यालय :-

9 प्रेमकुंज, आदर्श कालोनी शोहरतगढ़,
सिद्धार्थनगर - 272205

-: रिजनल शाखा :-

एमएमआईजी 1/28 प्रथम तल, सेक्टर-ए
सीतापुर रोड योजना, लखनऊ- 226021

-: सहयोगी संस्था :-

जमशेद जी टाटा ट्रस्ट, मुम्बई

Ptd. Shanker Offset Printers, S.Nagar, M.-9935282540

हल्दी की खेती

हल्दी मसालों में भारत की धरोहर है। इसका प्रयोग खाद्य पदार्थ एवं मांगलिक अवसर पर अवश्य प्रयोग होती है। यह कैंसररोधी, रक्त शोधक व चर्म रोग दूर करने में सहायक है, इसमें अनेक औषधीय गुण है।

हल्दी (टर्मरिक) भारतीय वनस्पति है। यह अदरक की प्रजाति का 5-6 फुट तक बढ़ने वाला पौधा है जिसमें जड़ की गाँठों में हल्दी मिलती है। हल्दी को आयुर्वेद में प्राचीन काल से ही एक चमत्कारिक द्रव्य के रूप में मान्यता प्राप्त है। औषधि ग्रंथों में इसे हल्दी के अतिरिक्त हरिद्रा, कुरकुमा लौंगा, वरवर्णिनी, गौरी, क्रिमिघ्ना योशितप्रीया, हट्टविलासिनी, हरदल, कुमकुम, टर्मरिक नाम दिए गए हैं। आयुर्वेद में हल्दी को एक महत्वपूर्ण औषधि कहा गया है। भारतीय रसोई में इसका महत्वपूर्ण स्थान है और धार्मिक रूप से इसको बहुत शुभ समझा जाता है। विवाह में तो हल्दी की रस्म का अपना एक विशेष महत्व है।